

राजस्थान में जैतून की खेती एवं इसका महत्व

(*अनिल कुमार¹, कोमल शेखावत¹, स्वर्णलता कुमावत¹ एवं अनिता²)

¹विद्यावाचस्पति शोधार्थी, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, कृषि महाविद्यालय, स्वामी केशवानन्द

राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर, 334006

²विद्यावाचस्पति शोधार्थी, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि महाविद्यालय, श्री

कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर (राजस्थान)- 303329

* anilkumarthakan@gmail.com

जैतून/औलीव (ओलिआ यूरोपिया एल.) एक सदाबहार बहुवर्षीय वृक्ष है जिसका कद लगभग 4-10 मीटर का होता है। यह वृक्ष मुख्य रूप से भूमध्य सागर की गर्मतर जलवायु वाले राष्ट्रों-पुर्तगाल, इटली, मिश्र, इजरायल, तुर्की, मोरक्को, ट्यूनीशिया, जॉर्डन, सीरिया में उगाया जाता है। समृद्धि व शान्ति के प्रतीक जैतून को इजरायल में एक पवित्र वृक्ष के रूप में जाना जाता है। वानस्पतिक विधी द्वारा उत्पादित जैतून के वृक्ष में 4-5 वर्ष में पुष्प आने लगते हैं। जैतून के फल 15-25 गुच्छों के रूप में आते हैं, चिकने, मुलायम होते हैं। ये फल प्रारम्भ में हल्के हरे-पीले रंग के होते हैं, परन्तु पकने पर गहरे लाल व बैंगनी रंग के हो जाते हैं। जैतून के फल पकने में लम्बा समय (6-7 माह) लेते हैं। जैतून के फलों से निकलने वाला तेल (12-15 प्रतिशत) बहुत ही अच्छा गुणकारी होता है तथा इसके काफी उपयोग हैं। जैतून के तेल का बाह्य व आंतरिक उपयोग औषधि के रूप में किया जाता है। साथ-साथ यह पोषक तत्वों के रूप में लबालब जाना जाता है।

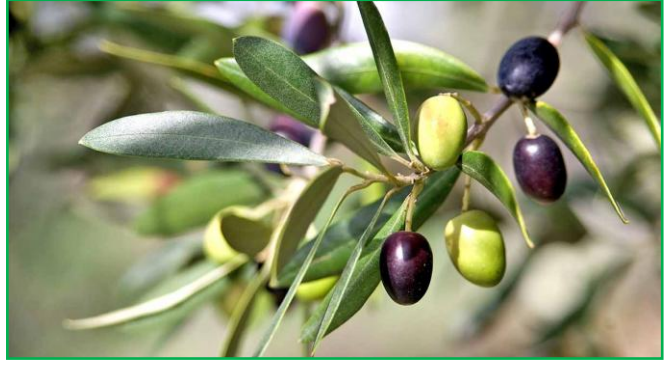
औषधीय उपयोग

जैतून के तेल में, मौजूद एंटी ऑक्सीडेंट्स तथा विटामिन ई त्वचा की चमक के लिये, चेहरों की झुरियों को समाप्त करने, धब्बों को समाप्त करने तथा उम्र का प्रभाव कम करने के लिए जाना जाता है, बालों के लिए भी लाभकारी हैं, हड्डियों को मजबूत करने तथा दिल संबंधी रोगों को दूर करने के लिये भी यह जाना जाता है। इसके बाह्य प्रयोग से त्वचा चमकदार तथा मुलायम रहती है। खाने के लिये यह अच्छा गुणकारी माना जाता कोलेस्ट्रॉल कम करने, तनाव कम करने, हाइपरटेंशन से सुधार व कब्ज दूर दर्द का इलाज, त्वचा लिये, जोड़ो के दर्द को होता है।



है। इसका उपयोग शर्करा से बचाव, कैंसर से बचाव, बचाव, पाचन में करने, माइग्रेन के सर के लिये, बालों के कम करने में भी

जैतून के तेल में ढेर सारे विटामिन (ए, डी, ई, के) व एंटी ऑक्सीडेंट्स (पौलीफीनोल, (पौलीफीनोल, सायटोस्टेरोल, शायरोसोल, ओलियो कैथोल) सक्रिय पाये जाते हैं। इसमें उपस्थित पौलीफीनोल, विटामिन ई, सायटोस्टेरोल, कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाते हैं। जैतून का तेल अल्ट्रावायलेट किरणों से भी बचाता है।



बाह्य उपयोग

चेहरे पर जैतून व नारियल का तेल सप्ताह में 2-3 बार लगायें. बालों पर रात को सोते समय लगायें अगली प्रातः हर्बल सैम्पू से धोयें, दर्द में हल्का गर्म कर के दर्द की जगह पर लगायें व मालिश करें।



जैतून तेल के प्रकार

1. **एक्स्ट्रा वर्जिन:** खाने का उच्च कोटी का तेल एसिडिटी कम करता है, सलाद ड्रेसिंग व सब्जियों के तलने में काम आता है।
 2. **वर्जिन आयल:** धीमी आंच में भोजन बनाने के काम आता है, रिफाइंड जैतून का तेल पोपेस जैतून का तेल
- राजस्थान में जैतून की खेती:** 19 अप्रैल, 2007 को राजस्थान सरकार द्वारा निजी व सरकारी भागीदारी में राजस्थान ओलीव कल्टीवेशन लिमिटेड का गठन किया गया था। जैतून की सात किस्मों (बरनिया, अरबिक्युना कोरटिना, फिशोलिन, पिकवाल, कोरनियकी तथा प्रोन्टोय) का आयात कर वर्ष 2009-2010 के बीच 182 हेक्टेयर में रोपड़ किया गया।

जलवायु तथा भूमि : जैतून के लिये सर्दियों में पर्याप्त ठंड (1.5-10 डिग्री सेन्टीग्रेड) व गर्मिया काफ़ी शुष्क गर्म (20-25 डिग्री सेन्टीग्रेड) मौसम उचित रहता है। इसके फल को पकने के लिये लम्बी गर्मी का मौसम चाहिये। आद्रता कम होनी चाहिये। चिकनी व भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों में की बेड बनाकर पौधों का रोपड़ किया जाता है। जैतून के पौधों को 7x 4 या 6x4 मीटर के फांसले पर रोपा जाता है।

सिंचाई व्यवस्था : एक वर्ष तक प्रतिदिन या हर तीसरे दिन पर 0.3-0.5 दैनिक पैन वाष्पीकरण के आधार सिंचाई दी जानी चाहिये, प्रति पौधा 4-5 लीटर जल प्रतिदिन की आवश्यकता होती है। बाद में वृक्षों को ड्रिप तंत्र से जोड़ दिया जाना चाहिये। इस अवस्था में जल अधिक खारा नहीं होना चाहिये।

गड्डों का बनाना : जैतून की रोपाई के लिये 60x60 60 से.मी. आकार के गड्डे पर्याप्त रहते हैं। प्रत्येक गड्डे में 10 किलो कम्पोस्ट व 3 किलो वर्मीकम्पोस्ट डाल कर पौधे रोपित किये जाते हैं।

उर्वरक व्यवस्था : एक वर्ष के पौधों के लिये 25 + 20 + 20 + 25 किलोग्राम नत्रजन, फॉस्फोरस, पोटाश व कैल्शियम की क्रमशः आवश्यकता होती है। घुलनशील उर्वरकों का हर सिंचाई बाद प्रयोग करें। सर्दियों में उर्वरक ना दे। उर्वरक व्यवस्था पहले 3 वर्ष तक आवश्यक है तथा निम्न तालिका के अनुसार दें।

उर्वरक	प्रथम वर्ष (कि.ग्रा./हे.)	द्वितीय वर्ष (कि.ग्रा./हे.)	तृतीय वर्ष (कि.ग्रा./हे.)
नत्रजन	25	75	150
फॉस्फोरस	20	100	190
पोटेशियम	20	100	300
कैल्शियम	25	50	120
मैग्निशियम	-	-	60
ज़िंक	-	-	15
बोरोन	-	-	15

कटाई-छंट्टाई : यह आवश्यक है कि पौधों से अधिक उत्पादन के लिये उनकी नियमित कटाई-छंट्टाई की जाये। पौधों को कप का आकार देने के लिये 70 से.मी. ऊँचाई होने पर ही शाखाएँ आनी चाहिये। पहले वर्ष में कटाई-छंट्टाई कम की जाती है तथा मुख्य तने के चारों ओर शाखाएँ आने दी जाती है। बाद में आवश्यकतानुसार कटाई-छंट्टाई की जाती है।

खरपतवार नियंत्रण : पौधो/ वृक्षों के बीच की पट्टी में हाथ से या मशीन से या ग्लायफोसेट रसायन से खरपतवार निकालना चाहिये। यह रसायन हरे पौधों को मार देता है। अतः ग्लायफोसेट का प्रयोग सावधानी से करें।

फलों में तेल की प्रतिशतता : रोपण के 4-5 वर्ष बाद फल आने लगते हैं। प्रारम्भ में तेल की मात्रा कम (10-12 प्रतिशत) परन्तु 7-8 वर्ष की अवधि में लगभग 13-15 प्रतिशत तक तेल प्राप्त हो सकता है। लगभग 2000-2500 किलोग्राम जैतून का तेल प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है। अतः किसान को जैतून की शुद्ध फसल से रूपये 2.50-3.0 लाख हेक्टेयर / वर्ष बचत हो सकती है। इसके साथ-साथ अन्तर फसलें उगाकर इस लाभ को बढ़ाया जा सकता है।

राजस्थान में 6 स्थानों पर जैतून के फार्म स्थापित किये गये हैं तथा उनकी खेती की जा रही है : ढिढोल, वस्सी, जयपुर (20.6 हेक्टेयर); वास, विसना, झंझुनु (30 हेक्टेयर), श्रीगंगानगर (30 हेक्टेयर), बाकलिया, नागौर (30 हेक्टेयर), साथू, जालौर (30 हेक्टेयर) व तिनकुरूडी, लवर (30 हेक्टेयर)। तेल संशोधन संयंत्र, लूणकरणसर में है।

विशेष

जैतून का तेल कोशिकाओं को नष्ट होने से बचाता है। इसके प्रयोग से चहरे पर चमक आती है। झुरियाँ समाप्त होती है तथा उम्र का प्रभाव कम करने के लिये भी इसे जाना जाता है। हड्डियों को मजबूत करने, दिल सम्बन्धी रोगों को दूर करता है। कोलेस्ट्रॉल कम करने, शर्करा कम करने व इसके दूसरे स्वास्थ्य फायदे हैं।

